सी-नाममाला

(हिन्दी-शब्दकोष)

सम्पादक

जुगलकिशोर मुख्तार

प्रकीर्णक पुस्तकमालाका प्रथम पुष्प

बनारसी-नाममाला

अर्थात्

कविवर पं० बनारसीदासकृत-

हिन्दी शब्दकोष

सम्पादक

जुगलकिशोर मुख्तार

अधिष्ठाता 'वीरसेवामन्दिर'

प्रकाशक—

वीरसेवामन्दिर

सरसावा जि० सहारनपुर

प्रथमावृत्ति ५०० प्रति | सन १९४१ | मूल्य चार आने

प्रकाशकके दो शब्द
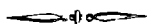
इस 'बनारसी-नाममाला' और उसके रचयिता कविवर पण्डित बनारसीदासजीका संक्षिप्त परिचय आश्रमके विद्वान शास्त्री पं० परमानन्दजी ने अपनी 'प्रस्तावना' में दे दिया है। यहाँ पर सिर्फ इतना और प्रकट कर देना है कि ग्रंथकी उपयोगिताको बढ़ानेके लिये आधुनिक पद्धतिसे तय्यार किया गया 'शब्दानुक्रमणिका' के रूपमें एक 'शब्दकोष' भी साथमें लगाया जा रहा है, जिससे सहज ही में मूल कोषके अन्तर्गत शब्दों और उनके अर्थोंको मालूम किया जा सकेगा, और इससे प्रस्तुत कोषका और भी अच्छी तरहसे उपयोग हो सकेगा तथा उपयोग करनेवालोंके समयकी काफी बचत होगी। इस शब्दकोषके तय्यार करनेमें

पं० परमानन्दजीने सूचनानुसार जो परिश्रम किया है उसके लिये वे धन्यवादके पात्र हैं।

यहाँ बाबू पन्नालालजी जैन अग्रवाल देहली और पं० रूपचन्दजी जैन, गार्गीय पानीपत को धन्यवाद दिये बिना भी मैं नहीं रह सकता, जिन की कृपासे इस 'नाममाला' की दो प्रतियां प्राप्त हुई हैं और जिसके फलस्वरूप ही यह ग्रन्थ प्रकाशमें आरहा है।

इस ग्रंथके साथमें जिस प्रकीर्णक-पुस्तक-माला-का प्रारम्भ हो रहा है, उसमें ऐसी ही उपयोगी छोटी छोटी पुस्तकें प्रकाशित हुआ करेंगी। आशा है जनता इस पुस्तकमालाको ज़रूर अपनाएगी।

अधिष्ठाता 'वीरसेवामन्दिर'

प्रस्तावना

दिगम्बर जैन समाजमें हिन्दी भाषाके अनेक अच्छे कवि और गद्यलेखक विद्वान हो गये हैं। उनकी रचनाओंसे समाज आज गौरवान्वित हो रहा है। जिस तरह हिन्दीके गद्यलेखकों—टीकाकारोंमें आचार्यकल्प पं० टोडरमलजी, पं० जयचन्दजी और पं० सदासुखरायजी आदि विद्वान् प्रधान माने जाते हैं, उसी तरह कवियोंमें पं० बनारसीदासजीका स्थान बहुत ही ऊँचा है। आप गोस्वामी तुलसीदासजीके समकालीन विद्वान् थे, १७ वीं शताब्दीके प्रतिभासम्पन्न कवि थे और कवितापर आपका असाधारण अधिकार था। आपकी काव्य-कला हिन्दी-साहित्यमें एक निराली छटाको लिये हुए है। उसमें कहींपर भी शृंगार जैसे रसोंका अथवा स्त्रियोंकी शारीरिक सुन्दरता

का वह बढ़ा चढ़ा हुआ वर्णन नहीं है जिससे आत्मा पतन की ओर अग्रसर होता है। आपके ग्रन्थरत्नोंका आलोडन करनेसे मालूम होता है कि आपके पास शब्दोंका अमित भंडार था, और इसीसे आपकी कविताके प्राय: प्रत्येक पदमें अपनी निजकी छाप प्रतीत होती है। कविता करनेमें आपने बड़ी उदारतासे काम लिया है। आपकी कविता आध्यात्मिक रससे ओत-प्रोत होते हुए भी बड़ी ही रसीली, सुन्दर तथा मन-मोहक है, पढ़ते ही चित्त प्रसन्न हो उठता है और हृदय शान्तिरससे भर जाता है। सचमुचमें आपकी आध्यात्मिक कविता प्राणियोंके संतप्त हृदयोंको शीतलता प्रदान करती और मानस- सम्बन्धी आन्तरिक मलको छांटती तथा शमन करती हुई अक्षय सुखकी अलौकिक सृष्टि करती है। आपकी कविताओंके पढ़नेका मुझे बड़ा शौक है—वह मेरे जीवन का एक अंग बन गई है। जब तक मैं नाटक समयसारके दो चार पद्योंको रोज नहीं पढ़ लेता तब तक हृदयको शांति

नहीं मिलती। अस्तु।

कविवर बनारसीदासजीका जन्म संवत् १६४३ में जौनपुरमें हुआ था। आपके पिताका नाम खड़गसेन था। आपने स्वयं अपनी आत्म-कथाका परिचय 'अर्द्धकथानक'के रूपमें दिया है, जो ६७३ दोहा-चोपाइयोंमें लिखा गया है और जिसमें आपकी ५५ वर्षकी जीवन-घटनाओंका तथा आत्मीय गुण-दोषोंका अच्छा परिचय कराया गया है। आपकी यह आत्मकथा अथवा जीवन-चरित्र भारतीय विद्वानोंके जीवन-परिचयरूप इतिहासमें एक अपूर्व कृति है। अर्धकथानकके अवलोकनसे स्पष्ट मालूम होता है कि आपका जीवन अधिकतर विपत्तियोंका—संकटोंका—सामना करते हुए व्यतीत हुआ है, और आपने उनपर सब धैर्य तथा साहसका अवलम्बन कर विजय प्राप्त की है।

यद्यपि भारतीय अनेक कवियोंने अपने अपने जीवन-चरित्र स्वयं लिखे हैं, परन्तु उनमें अर्धकथानक-जैसा आत्मीय

गुण-दोषोंका यथार्थ परिचय कहीं भी उपलब्ध नहीं होता। अर्धकथानकमें उपलब्ध होनेवाले १६४३ से १६९८ तकके (५५ वर्षके) जीवनचरित्रके बाद कविवर अपने अस्तित्वसे भारतवर्षको कितने समय तक और पवित्र करते रहे, यह ठीक मालूम नहीं होता। हाँ, बनारसीविलासमें संगृहीत 'कर्मप्रकृतिविधान' नामक प्रकरणके निम्न अंतिम पद्यसे इतना जरूर मालूम होता है कि आपका अस्तित्व संवत् १७०० तक जरूर रहा है; क्योंकि इस संवत्के फाल्गुन मासमें उसकी रचना की गई है। यथा—

संवत् सत्रहसौ समय, फाल्गुण मास वसन्त।
ऋतु शशिवासर सप्तमी, तब यह भयो सिद्धंत॥

आपकी बनाई हुई इस समय चार रचनाएँ उपलब्ध हैं—नाटक समयसार, बनारसी-विलास (फुटकर कविताओं का संग्रह) अर्द्धकथानक और नाममाला। इनमेंसे शुरूके दो ग्रन्थ तो पूर्ण प्रकाशित हो चुके हैं, और अर्द्धकथानक

का बहुत कुछ परिचय एवं उद्धरण पं० नाथूरामजी प्रेमीने बनारसीविलासके साथ दे दिया है। जनता इन तीनों से यथेष्ट लाभ भी उठा रही है। परन्तु चौथा ग्रन्थ 'नाम-माला' अबतक अप्रकाशित ही था। आज वह भी जनताके सामने उपस्थित किया जारहा है, यह निःसन्देह बड़ी ही प्रसन्नताका विषय है।

इस ग्रन्थकी रचना संवत् १६७० में, बादशाह जहाँगीर के राज्यकालमें, आश्विन मासके शुक्लपक्षमें विजयादशमी को सोमवारके दिन, भानुगुरुके प्रसादसे पूर्णताको प्राप्त हुई है। इस ग्रन्थके बनवानेका श्रेय आपके परममित्र नरोत्तमदासजीको है, जिनके अनुरोध एवं प्रेरणासे यह बनाया गया है। जैसा कि ग्रन्थके पद्य नं० १७०, १७१, १७२, १७५ से स्पष्ट है।

इस ग्रन्थकी रचनाका प्रधान आधार महाकवि धनंजय का वह संक्षिप्त कोष है जिसका नाम भी 'नाममाला' है

और जो अनेकार्थ-नाममाला सहित २५२ संस्कृत पद्योंमें पूर्ण हुआ है। परन्तु उस नाममालाका यह अविकल अनुवाद नहीं है और न इसमें दोसौ दोहोंकी रचना ही है, जैसा कि पं० नाथूरामजी प्रेमीने बनारसीविलासमें प्रकट किया है*। इस ग्रन्थके निर्माणमें दूसरे कोषोंसे कितनी ही सहायता ली गई है। ग्रन्थकी रचना बड़ी ही सुगम, रसीली और सहज अर्थावबोधक है। यह कोष हिन्दी भाषाके अभ्यासियोंके लिये बड़ी ही कामकी चीज़ है। अभी तक मेरे देखने में हिन्दी भाषाका ऐसा पद्यबद्ध दूसरा कोई भी कोष नहीं आया। संभव है इससे पहले या बादमें हिन्दी पद्योंमें और भी किसी कोषकी रचना हुई हो।

---

*"अजितनाथके छंदो और धनंजय-नाममालाके दोसौ दोहा की रचना इसी समय की।"

"यह महाकवि श्री धनंजयकृत नाममलाका भाषा पद्यानुवाद है।"　　—बनारसी-विलास पृ० ६७, १११

यहाँ एक बात और प्रकट कर देनेकी है, और वह यह कि यह 'नाममाला' कविकी उपलब्ध सभी रचनाओंमें पूर्वकी जान पड़ती है। यद्यपि इससे पूर्व उक्त कविवरने युवावस्थामें शृङ्गाररसका एक काव्यग्रन्थ बनाया था, जिसमें एक हजार दोहा-चौपाई थीं, परन्तु उसे विचारपरिवर्तन होनेके कारण नापसंद करके गोमतीके अथाह जलमें बिना किसी हिचकिचाहटके डाल दिया था। होसकता है कि 'नाममाला' की रचना उक्त काव्य-ग्रन्थके बाद की गई हो; परन्तु कुछ भी हो, कविवरकी उपलब्ध सभी रचनाओंमें यह ग्रन्थ पहली कृति है। इसीसे २३ वर्ष बाद की गई नाटक समयसारकी रचनामें गम्भीरता, प्रौढ़ता और विशदता और भी अधिक उपलब्ध होती है।

नाटक समयसारकी उत्थानिकामें वस्तुओंके नामवाले कितने ही पद्य पाए जाते हैं, उनकी नाममालाके पद्योंके साथ तुलना करनेसे नाटक समयसारवाले पद्योंकी प्रौढ़ता,

गम्भीरता और कविवरके अनुभवकी अधिकता स्पष्ट दिखाई देती है; २३ वर्षके सुदीर्घकालीन अनुभवके बादकी रचनामें अधिक सौष्ठव, सरसता एवं गाम्भीर्यका होना स्वाभाविक ही है। नाटक समयसार वाले उन पद्योंको जो नाममालाके पद्योंके साथ मेल खाते थे यथास्थान फुटनोटोंमें दे दिया गया है। शेष जिन नामोंवाले पद्य नाममालामें दृष्टिगोचर नहीं होते उन्हें पाठकोंकी जानकारीके लिये नीचे दिया जाता है:—

[1]दरस विलोकनि देखनौ, अवलोकनि दृगचाल।
लखन दृष्टि निरखनि जुवनि, चितवनि चाहनि भाल ॥४७॥
[2]ग्यान बोध अवगम मनन, जगतभान जगजान।
[3]संजम चारित आचरन, चरन वृत्त थिरवान ॥४८॥
[4]सम्यक सत्य अमोघ सत, निसंदेह निरधार।

---

१ दर्शननाम, २ ज्ञाननाम, ३ चारित्रनाम, ४ सत्यनाम।

टीक जथारथ उचित तथ [5]मिथ्या आदि अकार ॥४६॥

इस 'नाममाला' कोषमें कोई ३५० विषयोंके नामोंका सुन्दर संकलन पाया जाता है, जिससे हिन्दीभाषाके प्रेमी यथेष्ट लाभ उठा सकते हैं। कितने ही तो इस छोटीसी पुस्तकको सहज ही में कण्ठ भी कर सकते हैं। नामोंमें हिन्दी (भाषा), प्राकृत और संस्कृत ऐसे तीन भाषाओंके शब्दोंका समावेश है; बाकी जानि, बखानि, सु, जान, तह इत्यादि शब्द पद्योंमें पादपूर्तिके लिये प्रयुक्त हुए हैं, यह बात कविने स्वयं तीसरे दोहेमें सूचित की है।

इस कोषका संशोधनादि कार्य मुख्यतया एक ही प्रतिपरसे हुआ है, जो सेठका कूँचा देहलीके जैनमंदिरकी पुस्तकाकार १५ पत्रात्मक प्रति है, श्रावण शु० सप्तमी संवत्

---

५ सत्यके नामोंकी आदि में 'अ'कार जोड देनेसे मिथ्याके नाम हो जाते हैं।

१६३३ की लिखी हुई है, पं० बांकेरायकी मार्फत रामलाल श्रावक दिल्ली दर्वाजेके रहने वालेसे लिखाई गई है और उसपर मंदिरको, जिसके लिये लिखाई गई है, 'इंद्राजजीका' मंदिर लिखा है। बादको एक दूसरी शास्त्राकार १२ पत्रात्मक प्रति पानीपतके छोटे मंदिरके शास्त्रभंडारसे मार्फत पं० रूपचन्दजी गार्गीयके प्राप्त हुई, जो संवत् १८६८ आश्विन शुक्ल द्वितीया शनिवारकी लिखी हुई है और जिसे चौधरी दीनदयालने जलपथनगर (पानीपत) में लिखा है। इस प्रतिका पहला और अन्तके ४ पत्र दूसरी कलमसे लिखे हुए हैं और वे शेष पत्रोंकी अपेक्षा अधिक अशुद्ध है। इस प्रतिसे भी संशोधनादिके कार्यमें कितनी ही सहायता मिली है। यों प्रतियाँ दोनो ही थोड़ी-बहुत अशुद्ध हैं और उनमें साधारण-सा पाठ-भेद भी पाया जाता है; जैसे देहलीकी प्रतिमें तनय, तनया, पाठ हैं तो पानीपतकीप्रतिमें तनुज, तनुजा पाठ पाये जाते हैं स, श, य, ज, जैसे अक्षरोंके प्रयोगमें

भी कहीं कहीं अन्तर देखा जाता है और 'ख' के स्थानपर 'ष' का प्रयोग तो दोनो प्रतियोंमें बहुलतासे उपलब्ध होता है, जो प्राय: लेखकोंकी लेखन-शैलीका ही परिणाम जान पड़ता है। अस्तु।

उक्त दोनों ग्रंथप्रतियोंमें 'दोहा-वर्णित' विषयों का निर्देश दोहेके ऊपर गद्यमें दिया हुआ है, परन्तु एक एक दोहेमें कई कई विषयोंका समावेश होनेसे कभी कभी साधारण पाठकको यह मालूम करना कठिन हो जाता है कि कौन नाम किस विषयकी कोटिमें आता है। अत: यहाँ दोहेके ऊपर विषयोंका निर्देश न करके दोहेके जिस भागसे किसी विषयके नामोंका प्रारंभ है वहाँ पर क्रमिक अंक लगा कर फुटनोटमें उस विषयका निर्देश कर दिया गया है। इससे विषय और उसके नामोंका सहज हीमें बोध होजाता है।

इस ग्रन्थके संशोधन और सम्पादनमें श्रद्धेय पं०

(विषय-प्रवेश)

[1]तीर्थंकर सर्वज्ञ जिन, भवनासन भगवान।
पुरुषोत्तम आगत सुगत, संकर परम सुजान ॥ ४ ॥
बुद्ध मारजित केवली, वीतराग अरिहंत।
धरमधुरंधर पारगत, जगदीपक जयवंत ॥ ५ ॥
[2]अलख निरंजन निरगुनी, जोतिरूप जगदीस।
अविनासी आनंदमय, अमल अमूरति ईस ॥ ६ ॥
[3]गौर विसद अरजुन धवल, स्वेत सुकल सितवान।
[4]मोख मुकति वैकुंठ सिव, पंचमगति निर्वान X ॥ ७ ॥
[5]सरस्वति भगवति भारती, हंसवाहनी वानि।

---

१ तीर्थंकरनाम २ सिद्धनाम ३ श्वेतवर्णनाम ४ मोक्षनाम।

X नाटक समयसारमें इस नामका निम्न पद्य पाया जाता है:—
सिद्धक्षेत्र त्रिभुवनमुकुट, शिवथल अविचलथान।
मोख मुकति वैकुंठ शिव, पंचमगति निरवान ॥४२॥

५ सरस्वतीनाम।

वाकवादनी सारदा, मतिविकासनी जानि ॥८॥

[6]सुरग सुरालय नाक दिव, देवलोक सुरधाम।
[7]पुहकर गगन विहाय नभ, अंतरीच्छ आकास* ॥९॥

[8]त्रिदस विबुध पावकवदन, अमर अजर असुरारि।
आदितेय सुर देवता, सुमनस अंबरचारि ॥१०॥

[9]प्रजानाथ वेधा द्रुहिन, कमलासन लोकेस।
धातृ विधाता चतुर्मुख, विधि विरंचि देवेस ॥११॥

[10]नारायन वसुदेवसुत, दामोदर गोपीस।
अचुत त्रिविक्रम चतुर्भुज, वनमाली जगदीस ॥१२॥

मधुरिपु बलिरिपु बानरिपु, दानवदलन मुरारि।
कंसबिधुंसन पीतपट, कैटभारि नरकारि ॥१३॥

---

६ देवलोकनाम ७ आकाशनाम।

* नाटक समयसारमें इस नामका निम्न पद्य पाया जाता है:—
खं विहाय अंबर गगन, अंतरिच्छ जगधाम।
व्योम वियत नभ मेघपथ, ये अकासके नाम ॥३८॥

८ देवनाम ९ ब्रह्मानाम १० विष्णु (कृष्ण) नाम।

केसव कृष्ण मुकुंद अज, अंबुजनैन अनंत।
वासुदेव बलबंधु सिव, रमन राधिकाकंत ॥१४॥
पदमनाभि पदमारमन, गरुडासन गोपाल।
पुरुषोत्तम गोविंद हरि, जलसाई नँदलाल ॥१५॥
मुरलीधर सारंगधर, संख-चक्रधर स्याम।
सौरि गदाधर गिरिधरन, देवकिनंदन नाम ॥१६॥
[11]रमा लच्छि पदमालया, लोकजननि हरिनारि।
कमला पदमा इंदरा, छीरसमुद्र-कुमारि ॥१७॥
[12]कामपाल रेवतिरमन, रोहिनिनंदन नाम।
नीलवसन कुसली हली, संरपानि बलनाम ॥१८॥
[13]सतवादी धरमातमज, सोमवंस-राजान।
[14]भीम वृकोदर पवनसुत, कीचकरिपु बलवान ॥१९॥
[15]जिष्णु धनंजय फालुगुन, करनहरन कपिकेत।

---

११ लच्मीनाम १२ बलभद्रनाम १३ युधिष्ठिरनाम १४ भीमनाम १५ अर्जुननाम।

असुरदलन गांडीवधर, इंद्रतनुज हयसेत ॥२०॥

[१६]शंभु त्रिलोचन गौरिपति, हर पसुपति त्रिपुरारि ।

मनमथहरन पिनाककर, नीलकंठ बिषधारि ॥२१॥

वामदेव भूतेस भव, रुंडमालधर ईस ।

जटाजूट कपालधर, महादेव सिखरीस ॥२२॥

ससिसेखर सितिकंठ सिव, अंधकरिपु ईसान ।

सूली संकर गंगधर, वृषभकेतु वृषजान ॥२३॥

[१७]उमा अंबिका चंडिका, काली सिवा भवानि ।

गौरि पार्वती मंगला, हिमगिरितनया जान ॥२४॥

[१८]गनप विनायक गजबदन, लंबोदर बरदानि ।

[१९]षडमुख अगिनिकुमार गुह, सिखिवाहन मेनानि ॥२५॥

[२०]इंद्र पुरंदर वज्रधर, आखंडल अमरेस ।

घनवाहन पुरहूत हरि, महसनैन नाकेस ॥२६॥

१६ महादेवनाम १७पार्वतीनाम १८गणेशनाम १९ स्वामिकार्तिकेयनाम २० इन्द्रनाम ।

[२१]इंद्रपुरी अमरावती, [२२]सभा सुधर्मा नाम ।
[२३]इंद्रानी सु-पुलोमजा, सची अमरपतिवाम ॥२७॥
[२४]कल्पवृक्ष संतानद्रुम, पारिजात मंदार ।
हरिचंदन ए पंचसुर-तरु नंदनकंतार ॥२८॥
[२५]प्रथम सुपद्म महापद्म, कंद मुकुंद खरब्ब ।
संख नील कच्छ पद्मकर, ए नवनिधि सुरदब्ब ॥२९॥
[२६]देवबृता च तिलोत्तमा, मेनक उरवसि रंभ ।
[२७]सुधा अमृत पीयूष रस, जराहरन सुरअंभ ॥३०॥
[२८]सुरगिरि गिरिपति हेमगिरि, धरनीधरन सुमेरु ।
[२९]राजराज वैश्रवन तह, धनपति धनद कुबेर ॥३१॥
[३०]अभ्र मेघ खनमाल घन, धाराधर जलधार ।
कंद देव दामिनिअधिप, वारिवाह नभचारि ॥३२॥

---

२१ इन्द्रपुरीनाम २२ इन्द्रसभानाम २४ देववृक्षनाम २५ नवनिधिनाम २६ अप्सरा (देवांगना) नाम २७ अमृतनाम २८ सुमेरुपर्वतनाम २९ कुबेरनाम ३० मेघनाम ।

धूमजोनि जीमूत घन, पावकरिपु पयदान।
[31]संपा छनरुचि चंचला, चपला दामिनि जान ॥३३॥
[32]हाहा हूहू किंपुरुष, विद्याधर गंधर्व।
अप्सर यच्छ तुरंगमुख, देवयोनि ए सर्व ॥३४॥
[33]जातुधान दानव दनुज, राकस देव-विपक्ख।
दितिनंदन मानुषभखन, असुर निसाचर जक्ख ॥३५॥
[34]हरित ककुभ आसा दिसा, [35]सुरपति पावक काल।
नैरित वरुन पवन धनद, ईस आठ दिकपाल ॥३६॥
[36]दच्छिन नैरित वारुनी, वायु उत्तर ईसान।
पूरब पावक अध उरध, ए दस दिसि अभिधान ॥३७॥
[37]दिग्गज ऐरावत कुमुद, पुहुपदंत पुँडरीक।
अंजन सारवभौम तह, वामन सूपरतीक ॥३८॥

---

३१ बिजलीनाम ३२ गंधर्वनाम ३३ दैत्य (राक्षस) नाम ३४ दिशानाम ३५ अष्टदिक्पालनाम ३६ दशदिशानाम ३७ अष्ट दिग्गजनाम।

[३८]सूर विभाकर घामनिधि, सहसकिरन हरि हंस ।
मारतंड दिनमनि तरनि, आदित आतप-अंस ॥३९॥
सविता मित्र पतंग रवि, तपन हेलि भग भान ।
जगतविलोचन कमलहित, तिमरहरन निगमान ॥४०॥
[३९]इंदु छपाकर चंद्रमा, कुमुदबंधु मृगअंक ।
औषधीस रोहिनिरमन, निसमनि सोम ससांक ॥४१॥
चन्द्र कलानिधि नखतपति, हरिराजा हिमभान ।
सुधासूत द्विजराज विधु, छीरसिंधुसुत जान ॥४२॥
[४०]उडुगन भानि नछत्र ग्रह, रिक्ख तारका तार ।
[४१]सीतल सिसिर तुषार हिम, तुहिन सीत नीहार ॥४३॥
[४२]मलिन मलीमसि कालिमा, लंछन अंक कलंक ।
[४३]छाम छुधित दुर्बल दुखित, दीन हीन कृश रंक ॥४४॥
[४४]विभा मयूख मरीचिका, जोति कांति महधाम ।

---

३८ सूर्यनाम ३९ चन्द्रनाम ४० नक्षत्रनाम ४१ तुषारनाम ४२ कलंक नाम ४३ दुर्बलनाम ४४ किरणनाम।

पाद अंसु दीधिति किरनि, भानुतेज रुचि नाम ॥४५॥
[४५]जीव बृहस्पति देवगुरु, [४६]रौहिनेय बुध सौम ।
[४७]मंद सनीचर रवितनय, [४८]भूसुत मंगल भौम ॥४६॥
[४९/१]अगिनि धनंजय पवनहित, पावक अनल हुतास ।
ज्वलन विभावसु सिखि दहन [४९/२]वडवा उदधिनिवास ॥४७
[५०]पवन प्रभंजन गंधवह, अनिल वात पवमान ।
मारुत मरुत समीर हरि, पावकहित नभस्वान ॥४८॥
[५१]जमुनीबंधव समन हरि, धरमराज जम काल* ।

---

४५ बृहस्पतिनाम ४६ बुध(ग्रह)नाम ४७शनिश्चरनाम ४८ मंगलनाम ४९/१ अग्निनाम ४९/२ वडवानलनाम ५० वायुनाम ५१ यमराजनाम ।

* इस नामका नाटक समयसारमें निम्न जाता है:--

जम कृतांत अंतक त्रिदस, आवर्ती मृतथान ।
प्रानहरन आदिततनय, काल नाम परवान ॥

[५२] उल्बन दारुन भयकरन, घोर तिगम त्रिकराल ॥४९॥
[५३] दिवा दिवस बासर सुदिन, [५४] रजनी निसा त्रिजाम।
जामिनि छपा विभावरी, तमी तामसी नाम ॥५०॥
[५५] सिंधु समुद सरिताधिपति, अंबुधि पारावार।
अकूपार सागर उदधि, जलनिधि रतनागार ॥५१॥
[५६] सलिल उदक जीवन भुवन, अंबु वारि विष नीर।
अमृत पाथ वन तोय पय, अंभ आप जल क्षीर ॥५२॥
[५७] अवलि तरंग कलोल विचि, भंग [५८] पालि जलबांद।
अवधि सीम उपकंठ तट, कूल रोध मरजाद ॥५३॥
[५९] कमल तामरस कोकनद, पंकज पदम सरोज।
कंज नलिन अरविंद सित, पुंडरीक अंभोज ॥५४॥
[६०] इंदीवर नीलोतपल, पुहुकर [६१] नाल मृनाल।

---

५२ भयानकनाम ५३ दिवसनाम ५४ रात्रिनाम ५५ समुद्रनाम ५६ जलनाम ५७ तरंगनाम ५८ तटनाम ५९ कमलनाम ६० नीलकमलनाम ६१ मृणाल(कमलनाल)नाम।

[६२]ससिविकास कैरव कुमुद, [६३]ह्रद सरसी सर ताल ॥५५॥
[६४]मकर तिमंगल वारिचर, प्रथुरोमा षडलीन ।
तिमि जलजंतु विसारि झष, सफरी रोहित मीन ॥५६॥
[६५]पावन पूत पवित्र सुचि, [६६]अवलंबन आधार ।
[६७] कुंभ कलस भृंगार घट. [६८]गरभ कोस भंडार ॥५७॥
[६९]हीरा मानिक नीलमणि, पद्मराग गोमेद ।
मरकत मुक्त प्रवाल तह, वैडूरज नवभेद ॥५८॥
[७०]कंबु संख [७१]कच्छप कमठ. [७२]दादुर मिंडक भेक ।
[७३]प्रचुर प्रभूत सुबहुल बहु, अगनित भूरि अनेक॥५९॥
[७४]लच्छि धनंतरि कौस्तुभ, रंभा इंद्रतुरंग ।
पारिजात विष चंद्रमा, कामधेनु सारंग ॥६०॥

६२ कुमुदनाम ६३ सरोवरनाम ६४ मत्स्यनाम ६५ पवित्रनाम ६६ आधारनाम ६७ घटनाम ६८ भंडारनाम ६९ नवरत्ननाम ७० शंखनाम ७१ कच्छपनाम ७२ मेंडकनाम ७३ बहुतनाम ७४ चौदह रत्ननाम ।

सुरा संख पीयूषरस, ऐरावत-गज सार ।
सिंधु-मथन करि प्रगट किय, चौदह रतन उदार ।।६१।।
[७५]वनिक सेठ गाडा(था)धिपति, व्यवहारी धनवान ।
[७५]नाव पोत प्रोहन तरन, बोहित वाहन जान ।।६२।।
[७६]देवसरित मंदाकिनी, गगनवाहिनी गंग ।
[७७]त्रिपथगमनि भागीरथी, सिवतिय धवलतरंग ।।६३।।
[७८]सरिता धुनी तरंगिनी, नदी आपगा नाम ।
[७९]कालिंदी रविनंदनी, जमुना हरिविश्राम ।।६४।।
[८०]भूमि रसा छिति मेदिनी, छोणी छमा जगत्ति ।
अवनि अनंता कुंभिनी, गोधरनी वसुमत्ति ।।६५।।
अचला इला वसुंधरा, धरा मही धर सेस ।
[८१]भुवन लोक संसार जग, [८२]जनपद विषय सुदेस ।।६६।।

---

७५ व्यापारी तथा जहाजके नाम ७६ आकाशगंगानाम
७७ भूमिगंगानाम ७८ सामान्यनदीनाम ७९ यमुनानदीनाम
८० पृथ्वीनाम ८१ लोकनाम ८२ देशनाम ।

[83]पंसु रेनु रज धूलि तह, [84]परिष पंक जंबाल ।
[85]किंचित तुच्छ मनाक तनु, [86]दीरघ लंब बिसाल ॥६७॥
[87]संनिधि पास समीप अभि, निकट निरंतर लग्ग ।
[88]अंतर दूरि निरापरम, [89]सरनि पंथ पथ मग्ग ॥६८॥
[90]पन्नगलोक पतालपुर, अधोभवन वलिधाम ।
[91]सुषिर कुहिर रंधर विवर, [92]अवट कूप विलनाम॥६९
[93]वासुकि शेष सहस्रफनि, पन्नगराज वखान ।
[94]गरल हलाहल प्राणहर, कालकूट विष जान ॥७०॥
[95]काकोदर विषधर फनी, अहि भुजंग हरहार ।
लेलिहान पन्नग उरग, भोगी पवनाधार ॥७१॥
[96]निरय नरक कुंभीगवन, दुरगति दुःखनिधान ।

---

८३ धूलिनाम ८४ कीचड़नाम ८५ तुच्छनाम ८६ दीर्घनाम ८७ समीप (निकट) नाम ८८ दूरनाम ८९ मार्गनाम ९० पातालनाम ९१ विलनाम ९२ कूपनाम ९३ शेषनागनाम ९४ विषनाम ९५ सर्पनाम ९६नरकनाम।

[९७]बंध फंध शृंखल निगड, जंत पास संदान ॥७२॥
[९८]कलिल कलुष दहकृत दुरित, एन अंध अघ पाप*।
[९९]पीड़ा बाधा वेदना, विथा दुःख संताप ॥७३॥
[१००]मानुष मानव मनुज जन, पुरुष नृ गाध पुमान।
[१०१]विभु नेता पति अधिप इन, नाथ ईस ईसान ॥७४॥
[१०२]प्रमदा ललना नायका, जुवति अङ्गना वाम।
जोषा जोषित सुंदरी, वधू भामिनी भाम ॥७५॥
महिला रमनी कामिनी, वामलोचना वाम।
वनिता नारि नितंबिनी, बाला अबला नाम ॥७६॥
[१०३]जाया घरनि कलत्र त्रिय, भार्या पतनी दार।

९७ बंधननाम ९८ पापनाम।

*नाटक समयसारमें इस नामका निम्नपद्य पाया जाता है:—
पाप अधोमुख एन अघ, कंपरोग दुखधाम।
कलिल कलुस किल्विस दुरित, अशुभ करमके नाम ॥ ४१ ॥

९९ वेदनानाम १०० मनुष्यनाम १०१ स्वामिनाम १०२ स्त्रीनाम १०३ विवाहितास्त्रीनाम।

[104]दयित कंत वल्लभ रमन, धव कामुक भरतार ॥७७॥
[105]पतिव्रति एकपती सती, कुलवंती कुलबाल ।
[106]दूती कुटनी संफली, [107]सखी सहचरी आलि ॥७८॥
[108]गनिका रूपाजीविका, निरलज्जा पुरनारि ।
वारंगना विलासिनी, सर्ववल्लभा दारि ॥७९॥
[109]सहचर सखा सहाइ हित, संगत सुहृद सखित्त ।
[110]रिपु खल वैरि अराति अरि. दुर्जन अहित अमित्त ।८०
[111]जनक तात सविता पिता, [112]प्रसवति जननी मात ।
[113]पुत्र सूनु अंगज तनय. सुत नंदन तनुजात ॥८१॥
[114]भ्रातृजानि भगनी स्वसा, [115]बंधु सहोदर जात ।

---

१०४ भर्तारनाम १०५ सती स्त्रीनाम १०६ कुट्टिनी (कुल्टा)स्त्रीनाम १०७ सखीनाम १०८ वेश्यानाम १०९ मित्रनाम ११०शत्रुनाम १११ पितानाम १२मातानाम ११३ पुत्रनाम १४ बहिननाम ११५ सगे भाईकेनाम ।

[११६]अवरज अनुज कनिष्ठ लघु, [११७]वीर सुबंधव भ्रात ८२
[११८]मुनि भिक्षुक तापस तपा, जोगी जती महंत * ।
व्रती साधु ऋषि संयमी, [११९]आगम ग्रंथ सिद्धंत ।८३।
[१२०]उपदेशक उवझाय गुरु, आचारज गुनरासि ।
[१२१]राजसूय नृपयज्ञ क्रतु, [१२२]दीच्छित अंतेवासि ।८४।
[१२३]विबुध सूरि पंडित सुधी, कवि कोविद विद्वान ।
कुसल विचच्छन निपुन पटु, छम प्रवीन धीमान †८५

---

११६ छोटे भाईकेनाम ११७ बाँधव नाम ११८ साधुनाम ।

*नाटक समयसारमें इस नामका निम्न पद्य पाया जाता है:—

मुनि महंत तापस तपी, भिच्छुक चारितधाम ।
जती तपोधन संयमी, व्रती साधु ऋषि नाम ॥८६॥

११९ शास्त्रनाम १२० गुरुनाम १२१ राजयज्ञनाम १२२ शिष्यनाम १२३ पंडितनाम

† इस नामके नाटक समयसारमें निम्न दो पद्य पाये जाते हैं:–

निपुन विचच्छन विबुध बुध, विद्याधर विद्वान ।
पटु प्रवीन पंडित चतुर, सुधी, सुजन मतिमान ॥४४॥

[124]आदिबरन भूदेव द्विज, बाँभन विप्र सुजान।
[125]अभिजन संतति गोत कुल, बरग बंस संतान ॥८६॥
[126]मूरख मूक अजान जड़, मंद मूढ सठ बाल।
[127]कुत्सित पामर निरधनी, अधम नीच चंडाल ॥८७॥
[128]दाता दानि दरिद्रहर, [129]कृपन लुबध कीनास।
[130]अनुजीवी अनुचर अनुग. सेवक किंकर दास॥८८॥
[131]सुन्दर सुभग मनोहरन, कल मंजुल कमनीय।
रुचिर चारु अभिराम वर, दरसनीय रमनीय॥८९॥
[132]तसकर निसचर गूढनर, [133]भिल्ल पुलिंद किरात।
[134]दूत चारुचर [135]पिसुन खल, [136]असनि वज्र निघोत

कलावंत कोविद कुसल, सुमन दच्छ धीमंत।
ज्ञाता सज्जन ब्रह्मविद्, तज्ञ गुनीजन संत ॥४४॥

१२४ ब्राह्मणनाम १२५ कुलनाम १२६मूर्खनाम १२७ अधमनाम १२८दातारनाम १२९ कृपणनाम १३० सेवकनाम १३१सुन्दरनाम १३२चोरनाम १३३ भीलनाम १३४दूतनाम १३५दुष्टनाम १३६ वज्रनाम।

[137]मन मानस अंतःकरन, हृदय चेत चित जानि ।
[138]जीव हंस चेतन अलख, जंतु भूत जन प्रानि ॥९१॥
[139]वृद्ध पलिततनु थविरनर, [140]जुवजन तरुन रसाल ।
[141]सावक दारक पाक प्रथु, डिंभ पोत सिसु बाल॥९२॥
[142]काय कलेवर संहनन, मूरति उपधन गात ।
विग्रह देह सरीर वपु, पंचभूतसंजात ॥९३॥
[143]रुधिर रकत सोणित छतज, [144]पिसित तरस पल मांस
[145]विष्ठा गूथ पुरीष मल, [146]बीज रेत बल अंस ॥९४॥
[147]सीस मुंड उतमंग सिर, [148]अलिक ललाट सुभाल ।
[149]कंठ सिरोधर ग्रीव गल, [150]चिकुर केस कच बाल ।९५

१३७ मननाम १३८ जीवनाम १३६ वृद्धपुरुषनाम १४० युवानाम १४१ बालकनाम १४२ शरीरनाम १४३ रुधिरनाम १४४ मांसनाम १४५ मलनाम १४६ वीर्यनाम १४७ शिरनाम १४८ मस्तकनाम १४६ कंठनाम १५० बालनाम ।

[151]नैन विलोचन चक्षु दृग, [152]पलक [153]भौंह भ्रुव जानि।
[154]वदन तुंड आनन लपन, [155]वचन सबद रव बानि९६
[156]दंत दसन रादक रदन, [157]नासि नासिका घ्रान।
[158]अधर दंतपट रदनछद, [159]श्रोत श्रवन श्रुति कान।९७।
[160]गंड कपोल [161]सुवक्ष उर, [162]कुच उरोज पयदानि
[163]उदर जठर [164]कटि श्रोणि कट [165]भुजा बाहु [166]करपानि
[167]तारक गोलक पूतली, [168]दिष्टि अपांग कटाख।
[169]अंजन कज्जल रागगज, [170]अंगुलिका करसाखा।९८
[171]ऊरु जानु जंघा जघन, [172]अंह्रि चरन पद पाय।

---

१५१ नेत्रनाम १५२ पलकनाम १५१ भौंहनाम १५४ मुखनाम ३५५ वचननाम १५६ दाँतनाम १५७ नासिकानाम १५८ ओष्ठनाम १५९ कर्णनाम १६० कपोल-नाम १६१ छातीनाम १६२ स्तननाम १६३ पेटनाम १६४ कमरनाम १६५ भुजानाम १६६ हस्तनाम १६७ पुतली नाम १६८ कटाक्षनाम १६९ काजलनाम १७० अंगुरीनाम १७१ जांघनाम १७२ पैर (पाद) नाम।

[१७३]कबरी चूडा धमिल सिख, वैनी कचसमुदाय ॥१००॥
[१७४]सदन गेह आलय निलय, मंदिर भवन अवास।
साल सरन आगार गृह, धाम निकेत निवास ॥१०१
[१७५]सौध राजगृह धवलगृह, [१७६]नगर पटन पुर ग्राम।
[१७७]खेय खात परिखा गरत, [१७८]उपकानन आराम ।१०२
[१७९]सुरमंडप देवायतन, चैत्यालय प्रासाद।
[१८०]तांडव नाटक नृत्य तह, [१८१]गीत गान सुर नाद १०३
[१८२]षडज ऋषभ गंधार पुनि, पंचम मध्यम जान।
धैवत रूप निषाद तह, ए सुर सात वखानि ॥१०४॥
[१८३]करुना कौतुक भयकरन, वीर हास सिंगार।
सांत रुद्र बीभत्स तह, ए नवरस संसार ॥१०५॥

---

१७३ चोटीनाम १७४ घरनाम १७५ राजगृहनाम १७६ नगरनाम १७७ खाईनाम १७८ बागनाम १७९ मंदिरनाम १८० नृत्यनाम १८१ गीतनाम १८२ सप्तस्वरनाम १८३ नवरसनाम।

[१८४]आमल तिक्त कषाय कटु, क्षार मधुर रस जान।
[१८५]ग्रीषम पावस सरद हिम, सिसिर बसंत बखान १०६
[१८६]उद्वर्तन मंजन कुसुम, चंदनलेपशरीर।
अलकावलि मसिविंदु तह, कजल कंचुकी चीर १०७
कुंकुम खौरि तँबोलमुख, चंदनजावक लज्ज।
दसनसुरंगित चातुरी, ए षोडस तियसज्ज ॥१०८॥
[१८७]कंकन किंकिनि कंठमनि, कुंडल वेसरि आढ।
नूपुर हार स-मुद्रिका, बिछिक्क जेहरि टाड ॥१०९॥
[१८८]मीनकेतु मनसिज मदन, मार काम मनमत्थ।
संवरहरन अनंग रति,-रमन पंचसरहत्थ ॥११०॥
[१८९]बसीकरन मोहन तपन, उच्चाटन उन्माद।
[१९०]तंती दुंदुभि संखधुनि, कंस ताल करवाद ॥१११॥

---

१८४ षट्रसनाम १८५छहऋतुनाम १८६सोलहशृंगार नाम १८७ द्वादश आभरणनाम १८८ कामनाम १८९काम-पंचबाणनाम १९० पंचशब्दनाम।

[१९१]कौतूहल कौतुक अहो, अदभुत चित्र अचंभ ।
[१९२]माया कैतव छद्‌म छल, व्याज कपट मिष दंभ ११२
[१९३]हरष तोष आनंद मुद, [१९४]अमरष कोप सरोस ।
[१९५]कृपा सुहित करुना दया, अनुकंपा अनुकोस ॥११३॥
[१९६]प्रेम प्रीति अभिलाष सुख, राग नेह संजोग ।
[१९७]बिछुरन फुल्लक बिरह दुख, मनमथ विथा वियोग॥११४
[१९८]त्याग विहाइत दान दत, [१९९]समता हित सुख सात ।
[२००]गुन श्रुति कीर्ति उदाहरन, जस सलोक अवदात ॥११५
[२०१]प्रकट साधु सुविदित विसद, [२०२]निरुपम अकथ अनूप
[२०३]मंद बिलंबित सिथिल तह, [२०४]छाँह बिंब प्रतिरूप ११६

---

१९१ कौतुकनाम १९२ कपटनाम १९३ आनंदनाम १९४ कोपनाम १९५ दयानाम १९६ प्रीतिनाम १९७ विरहनाम १९८ दाननाम १९९ सुखनाम २०० कीर्तिनाम २०१ प्रकटनाम २०२ अनुपमनाम २०३ विलम्बनाम २०४ छायानाम

[२०५]तुल्य सवर्ण सधर्म सम, सदृस सरूप समान ।
[२०६]जुगत संसक्त सहित जुत, [२०७]नाम गोत अभिधान ॥
[२०८]प्रतिदिन नित संतत सदा, [२०९]नूतन नव सुनवीन ।
[२१०]प्राकृत जीरन सुचिर तनु, जरठ पुरातन छीन ॥११८॥
[२११]करकस कठिन कठोर दिढ़, निठुर परुष असलील ।
[२१२]कोमल पेसल नरम मृदु, [२१३]प्रकृति स्वभाव सुसील ॥
[२१४]बुद्धि मनीषा सेमुषी, धी मेधा मति ग्यान ।*
[२१५]भावक मंगल कुसल सिव, भविक छेम कल्यान ॥१२०
[२१६]छिप्र वेग सहसा तुरत, झटित आसु लघु जान ।

---

२०५ समाननाम २०६ युक्तनाम २०७ नाम- नाम २०८ सदानाम २०९ नूतन नाम २१० पुरातननाम २११ कठिन-नाम २१२ कोमलनाम २१३ स्वभावनाम २१४ बुद्धिनाम ।

*नाटक समयसारमें इस नामका निम्न पद्य है:—

प्रज्ञा धिसना सेमुसी, धी मेधा मति बुद्धि ।
सुरति मनीषा चेतना, आशय अंश विसुद्धि ॥ ४३ ॥

२१५ कल्याणनाम २१६ शीघ्रनाम ।

[२१७]तरल अथिर चंचल सुचल, चपल विलोल बखान।१२१
[२१८]अहंकार अविनय गरव, उन्नतगल अभिमान।
[२१९]अंधकार संतमस तम, धूमर तिमिर भयान ।।१२२।।
[२२०]गउर पीत कंचनवरन, [२२१]रक्त सुलोहित लाल।
[२२२]हरित नील पालास तह, [२२३]स्याम भृंगरुचि काल।१२३
[२२४]असन भोग आहार भख, [२२५]लीला केलि विलास।
[२२६]विधुर कृच्छ्र संकट गहन, [२२७]व्रत संजम उपवास।१२४
[२२८]मृषा अलीक मुधा विफल, वृथा वितथ मिथ्यात × ।
[२२९]अंत विनास निधन मरन, पंचत प्रलय निपात ।।१२५।।

---

२१७ चंचलनाम २१८ अभिमाननाम २१९ अंधकारनाम २२० पीतवर्णनाम २२ रक्तवर्णनाम २२२ हरितवर्णनाम २२ श्यामवर्णनाम २२४ आहारनाम २२५क्रीड़ानाम २२६कष्टनाम २२७व्रतनाम २२८असत्यनाम।

× अजथारथ मिथ्या मृषा, वृथा असत्त अलीक।
मुधा मोघ निष्फल वितथ, अनुचित असत अठीक (ना.स.)

२२९ मरणनाम।

[230]प्रस्तर उपल पषान दृष, [231]भूदारन हल सीर।
[232]हयँगवीन सर्पी घिरत,[233]दुग्ध अमृत पय क्षीर।१२६
[234]अरथ वित्त वसु द्रविन धन X [235]सुरा वारुनी हाल।
मधु मदिरा कादंबरी, सीधु मद्य कीलाल ॥१२७॥
[236]हाटक हेम हिरण्य हरि, कंचन कनक सुवर्ण।
[237]जातरूप कलधौत तह, रजत रूप शुचिवर्ण ॥१२८॥
[238]भूषन मंडन आभरन, अलंकार तनमाल।
[239]अंसुक निवसन चीर पट, चीवर अंबर छाल॥१२९॥
[240]गंधसार चंदन मलय, [241]हिम कपूर घनसार।

२३०पाषाणनाम २३१ हलनाम २३२ घृतनाम २३३ दुग्धनाम २३४ धननाम।

X भाव पदारथ समय धन, तत्त्व वित्त वसु दर्व।
द्रविन अरथ इत्यादि बहु, वस्तुनाम ये सर्व (ना. स.)

२३५मदिरानाम २३६सुवर्णनाम २३७ रजतनाम २३८ आभरणनाम २३९वस्त्रनाम २४०चन्दननाम २४१कपूरनाम।

[२४२]नाभिज मृगमद कस्तुरी, कुंकुम रकतागार ॥१३०॥
[२४३]सयन मंच परयंक तह, [२४४]सेज तलप उपधान।
[२४५]दरपन मुकुर सुआदरस, [२४६]छायाकरन वितान ॥१३१
[२४७]मुकट किरीट सिरोरतन, [२४८]आतपत्र सिरछत्र।
[२४९]पद सिंहासन पीठ तह, [२५०]हेति सुआयुध अस्त्र ॥१३२
[२५१]भूप महीपति छत्रधर, मंडलेस राजान।
[२५२]चक्री सारवभौमनृप, [२५३]मंत्री सचिव प्रधान ॥१३३॥
[२५४]सेव निषेव उपासना, [२५५]शासन पुहुप (?) निदेस।
[२५६]भाग पुन्य सुविहित सुकृत*, [२५७]सकल खंड लव लेस

---

२४२ कस्तूरीनाम २४३ पलंगनाम २४४ शय्यानाम २४५ दर्पणनाम २४६ चंदोवानाम २४७ मुकुटनाम २४८ छत्रनाम २४९ सिंहासननाम २५० अस्त्रनाम। २५१ राजानाम २५२ चक्रवर्तिनाम २५३ मंत्रीनाम २५४सेवानाम २५५आज्ञानाम २५६पुण्यनाम २५७खंडनाम

*इस नामका नाटक समयसारमें निम्न पद्य पाया जाता है:—

[२५८]महिषी पट्टनिवासिनी, [२५९]पुररखवाल तलार ।
[२६०]षंढ नपुंसक कंचुकी, [२६१]द्वारपाल प्रतिहार ॥१३५॥
[२६२]पौर लोक नागर प्रजा, [२६३]साल दुर्ग प्राकार ।
[२६४]पंथनिरोध कपाट पट, [२६५]गोमुख नगरदुवार ॥१३६॥
[२६६]जाल गवाख समीरपथ, [२६७]ऊर्द्धपंथ सोपान ।
[२६८]बंक विषम अंकुल कुटिल, [२६९]कुंडल मंडल जान १३७
[२७०]तालपत्र कुंडल श्रवण, सिरबंधन सिंदूर ।
पान वलय कंकन कटक, बाँहरक्ख केयूर ॥१३८॥

पुण्य सुकृत ऊरधवदन, अकररोग शुभकर्म ।
सुखदायक संसारफल, भाग बहिर्मुख धर्म ॥१४०॥

२५८ रानीनाम २५९ कोटपालनाम २६० खोजानाम २६१ द्वारपालनाम २६२ प्रजानाम २६३ कोटनाम २६४ किवाड़नाम २६५ द्वारनाम २६६ झरोखा (खिड़की) नाम २६७ सीढ़ीनाम २६८ वक्र (टेढ़ा) नाम २६९ घेरेके नाम २७० अङ्गभूषण नाम ।

तुला कोटि नूपुर चरन, भाल सुतिलक ललाम।
कटि किंकिनि मेखल रसन, छुद्र घंटिका नाम ॥१३९॥
[२७१]बल अनीक सेना चमू, कटक बाहिनी दंड।
[२७२]चिन्ह पताका केतु ध्वज, वैजयंति तह झंड ॥१४०॥
[२७३]सर सायक नाराच खग, बान सिलीमुख कंड।
[२७४]धनुष कारमुक चाप धनु, गुनधारन कोदंड ॥१४१॥
[२७५]सरवारन कंचुकि कवच, [२७६]डर भय त्रास असात।
[२७७]असि कृपान करवाल तह, [२७८]छत प्रहार संघात १४२
[२७९]रन विग्रह संजुग समर, संपराय संग्राम।
कदन आजि संगर कलह, जुद्ध महाहव नाम ॥१४३॥
[२८०]जाचक मंगत बंदि जन, [२८१]रंगभूमि रनखेत।

---

२७१ सेनानाम २७२ ध्वजानाम २७३ बाणनाम २७४ धनुषनाम २७५ जिरह (बख्तर) नाम २७६ भयनाम २७७ तलवारनाम २७८ घावनाम २७९ संग्राम (युद्ध) नाम २८० याचकनाम २८१ रणभूमिनाम।

[२८२]सूरबीर जोधा सुभट, [२८३]भूत पिशाच परेन ॥१४४॥
[२८४]सैल अचल गिरि सिखरि नग, पर्वत भूधर नाम।
[२८५]देवखात बिल कंदरा, दरी गुफा मुनिधाम ॥१४५॥
[२८६]पीवर पीन सुथूलगुन, [२८७]उन्नत उच्च उतंग।
[२८८]विस्तीरनविस्तर विपुल, [२८९]अध नचनीच विभंग१४६
[२९०]कानन विपन अरण्य वन, गहन कच्छ कंतार।
[२९१]विटपि महीरुह साखि तरु, अग पादप फलधार॥१४७
[२९२]छ्दन सुपत्त पलाम दल, [२९३]पेडमूल जड कंद।
[२९४]पुहुप प्रसून सुमन कुसुम, [२९५]मधु पराग मकरंद ॥१४८
[२९६]चूत आम सहकार तरु, सौरभ अंब रमाल।

---

२८२ सुभटनाम २८३ प्रेतनाम २८४ पर्वतनाम २८५ गुफानाम २८६ स्थूलनाम २८७ उतंगनाम २८८ विस्तारनाम २८९ नीचेके नाम २९० वननाम २९१ वृक्ष-नाम २९२ पातनाम २९३ मूल (जड़) नाम २९४ पुष्पनाम २९५ परागनाम २९६ आम्रनाम।

[२९७]रंभ मोच केला कदलि, [२९८]मालकार वनपाल ॥१४९
[२९९]वल्ली वेलि प्रतति लता, [३००]वाटिक कुसुम अराम।
[३०१]सुरभि सुगंध सुवासना, [३०२]माल हार स्रज दाम॥१५०
[३०३]कंठीरव कुंजरदमन, हरि हरिधिप मृगसूल।
बली पंचमुख केसरी, सरभ सिंह सार्दूल ॥१५१॥
[३०४]गज करेनु मातंगधिप, करि वारन सुंडाल।
सिंधुर दंती नाग इभ, ‡कलभ मतंगजबाल॥१५२॥
[३०५]अश्व बाजि घोटक तुरग, हरि तुरंग हय वाह।
[३०६]ऊँट वेगगामुक करभ, [३०७]सूकर क्रोड वराह ॥१५३॥
[३०८]बानर बलिमुख विपनचर, साखामृग कपि कीस।
[३०९]सारन हरिन कुरंग मृग, अजिनजोनि एनीस ॥१५४॥

२९७केलानाम २९८मालीनाम २९९लतानाम ३००फुलवारीनाम ३०१ सुगंधनाम ३०२ मालानाम ३०३ सिंहनाम ३०४ हाथी और ‡हाथीके बच्चेके नाम ३०५ अश्वनाम ३०६ऊँटनाम।३०७शूकरनाम ३०८बन्दरनाम ३०९मृगनाम।

[310]धेनु गाय पसु [311]वृषभ सिव, [312]महिषा वाहलुलाय
[313]जंबुक भीरु शृगाल सिव, मृगधूरत गोमाय ॥१५५॥
[314] ऊंदर मूषक नागरिपु, [315]बिल्ला ओतु मँजार।
[316]रासभ गर्दभ रैंकु खर, [317]चर गति गमन बिहार १५६
[318]श्वान पुरागत ग्रामहरि, श्वा कूकर दिढ कक्ख।
सारमेय निशि जागरण, मंडल ओतुविपक्ख ॥१५७॥
[319]श्रोत्र अक्ष इंद्रिय करन, [320]कंज विषान सु-सृंग।
[321]सारंग षट्पद मधुप अलि, भ्रमर सिलीमुख भृंग १५८
[322]सकुनि संकुन पतंग खग, सलभ विहंगम पाक्ख।
[323]खगपति विनतासुत गरुड, हरिवाहन अहिभक्ख १५९

---

३१० गायनाम ३११ बैलनाम ३१२ भैंसानाम ३१३ शृगालनाम ३१४ मूषकनाम ३१५ बिलाव (बिल्ली) नाम ३१६गर्दभनाम ३१७गमन(चाल)नाम ३१८कूकरनाम ३१९इन्द्रियनाम ३२०सींगनाम ३२१भ्रमरनाम ३२२पक्षिनाम ३२३ गरुड़नाम।

[३२४]जीवंजीव चकोर तह, [३२५]कुरकट तामरचूर।
[३२६]केकी अहिरिपु नीलगल, सिखी सिखंडि मयूर १६०
[३२७]चाखसु खंजन खंजगिट, [३२८]बायस करट कराल।
[३२९]पिक कोकिल तह[३३०]कीर सुक,[३३१]वरट सुहंस मराल
[३३२]कौसिक पेचक काकरिपु, [३३३]पिक चातक सारंग।
[३३४]पारावत सुकपोत गन,[३३५]चकवा कोक रथंग॥१६२॥
[३३६]पूग समाज समूह व्रज, ओघ संघ संघात।
जूथ पुंज समवाय कुल, निकर कदंबक व्रात॥१६३॥
अवलि वृंद संदोह चय, संचय निचय निकाय।
आली पंकति निवह गन, राजि रासि समुदाय॥१६४॥

---

३२४ चकोरनाम ३२५ कुक्कुटनाम ३२६ मयूरनाम ३२७ ममोला (पक्षिविशेष) नाम ३२८ काकनाम ३२६ कोकिलनाम ३३० तोतानाम ३३१ हंसनाम ३३२उलूकनाम ३३३ पपीहानाम ३३४ कबूतरनाम ३३५ चकवानाम ३३६ समूहनाम ।

[३३७]नारिपुरुष दंपति मिथुन, [३३८]द्वंद जुगम जुग जान।
उभय जुगल जम जमल दु बि, लोचनसंग्य बखान१६५
[३३९]तीन लोक गुन सिवनयन, [३४०]चउ जुग बेद उपाय।
[३४१]पंच बान इंद्रिय सबद, [३४२]षट रितु रस अलिपाय १६६
[३४३]सात द्वीप मुनि हय बिसन, [३४४]आठ धात गिरि सार।
[३४५]नव ग्रह रस तह [३४६]सून्य नभ, अनुक्रम अंक बिचार
[३४७]ध्रुव अडोल थावर सुथिर, निश्चल अविचल जान।
[३४८]दीरघायु चिर आयु तह, चिरंजीव सुबखान ॥१६८॥

(उपसंहार और प्रशस्ति)

होय जहाँ कछु हीन, छंद सबद अक्षर अरथ।
गुनगाहक परवीन, लेहु विचारि सँवारि तह ॥१६९॥

---

३३७ स्त्री-पुरुषसंयोगनाम ३३८ युग (जोड़के) नाम ३३९ तीनके नाम ३४० चारके नाम ३४१ पाँचके नाम ३४२ छहके नाम ३४३ सातके नाम ३४४ आठके नाम ३४५ नौके नाम ३४६ शून्यके नाम ३४७ स्थिरनाम ३४८ चिरंजीवनाम ।

मित्र नरोत्तम थान, परम विचच्छण धर्मनिधि ।
तासु वचन परवान, कियो निबंध विचारि मनि ।।१७०।।
सोरहसै सत्तरि समै, असू मास सित पच्छ ।
विजैदसम ससिवार तह, श्रवण नखत परतच्छ ।।१७१।।
दिन दिन तेज प्रताप जय, सदा अखंडित आन ।
पातसाह थिर नूरदी, जहाँगीर सुलतान ।।१७२ ।।
जैन धर्म श्रीमाल कुल, नगर जौनपुर वास ।
खडगसेन-नंदन निपुन, कवि बनारसीदास ।।१७३।।
कुसुमराजि नाना वरन, सुन्दर परम रसाल ।
कोमल-गुनगर्भित रची, नाममाल जैमाल ।।१७४।।
जे नर राखें कंठ निज, होय सुमति परकास ।
भानु सुगुरु परसाद तहँ, परमानंद-विलास ।।१७५।।

❀ इति बनारसी-नाममाला ❀

'नाममाला'का शुद्धिपत्र

दोहा नं०	अशुद्ध	शुद्ध
१३	बानरिपु	बाणरिपु
१७	इंदरा	इंदिरा
१८	कुसली	मुसली
१९	सोमवंसराजान	सोमवंसि राजान
२९	कछपदमकर	कच्छप मकर
३९	घामनिधि	धामनिधि
४३	भानि	भं
४५	महधाम	मह धाम
४७	वडवा	बाडव
६२	सेठ	सेठि
,,	गाडा (था) धिपति	गाहाधिपति
६९	अधोभवन	अधोभुवन
,,	कुहिर	कुहर
७०	फनि	फन
७३	अंध	अंघ
,,	दहकृत	दुष्कृत

८०	सखित्त	सुमित्त
८२	भ्रात्रिजानि	भातृजानि
,,	बंधु सहोदर जात	वीर सहोदर भ्रात
,,	वीरसु-बंधव भ्रात	बंधु सु-बंधव जात
९०	चारुचर	चार चर
९३	उपधन	अपघन
९६	सवद	सबद
१०८	चंदनजात्रक	वंदन जावक
११९	सुलील	सु-शील
१३६	गोमुख	गोपुर
१३७	अंकुल	अंकुश
१३८	सिरवंधन	सिर वंदन
,,	पान	पानि
१४२	कंचुकि	कंचुक
१५१	हरिधिप	द्वीपी
१५२	मातंगध्रिप	मातंग द्विप
१५४	सारन	सारँग
१५५	सित्र	वृष
१६१	चारवसु	चाष सु

शब्दानुक्रमकोष

शब्दानुक्रमकोष

बनारसी-नाममालामें जो शब्द प्राकृत या अपभ्रंश भाषाके हैं अथवा इन भाषओंके शब्दाक्षरोसे मिश्रित हैं उनके साथ इस कोषमें उनका पूरा संस्कृत-रूप अथवा जिन अक्षरोंके परिवर्तनसे वह रूप बनता है उन अक्षरोंको ही ब्रैकट ( ) के भीतर दे दिया है; जैसे 'अगिनि' के साथ (अग्नि), 'अचुत' के साथ (अच्युत), 'अनुकोस' के साथ (कोश), 'ईस' के साथ (श) लगा दिया है। इससे पाठकों को दो सुविधाएँ होंगी—एक तो वे उन शब्दोंके संस्कृत रूपको जान सकेंगे, दूसरे आज कलकी हिन्दी भाषामें जो प्राय: संस्कृत शब्दोंका व्यवहार होता है उनके अर्थको भी वे इस कोषपरसे समझ सकेंगे। बाकी अधिकाँश शब्द संस्कृत भाषाके ही हैं, कुछ ठेठ हिन्दी तथा प्रान्तिक भी हैं, उन सबको ज्योंका त्यों रहने दिया है। हाँ, ठेठ हिन्दी तथा प्रान्तिक शब्दोंके आगे ब्रैकट [ ] में देशीका सूचक 'दे०' बना दिया है। और सब शब्दोंके स्थानकी सूचना दोहोंके अंकों द्वारा की गई है।

—सम्पादक

शब्दानुक्रमकोष

ख

ज

तमि(मी)	५०
तम	१२२
तरन(णि)	६२
तरनि(णि)	३१
तरल	१२१
तरस	६४
तरंग	५३
तरंगिनी(णी)	६४
तरु	१४७, १४६
तरुन(ण)	६२
तलप (तल्प)	१३१
तलार [दे०]	१३५
तसकर (तस्कर)	६०
तह(तथा)	सर्वत्र
तंती(त्री)	१११
तंबोल(ताम्बूल)मुख	१०८
तात	८१
तार (तारा)	४३
तारक	६६
तारका	४३
तापस	८३
तामरचूर (ताम्रचूड)	१६०
तामरस	५४
तामसी	५०
ताल	५५, १११
तालपत्र	१३८
तांडव	१०३
तिक्त	१०६
तिगम (तिग्म)	४६
तिगमान (तिग्मवान्)	४०
तिमरहरन(ण)	४०
तिमंगल (तिमिंगिल)	५६
तिमि	५६
तिमिर	१२२

थ

द

ब

भ

म

“अनेकान्त”

सत्य, शान्ति और लोकहितका सन्देश—

मासिकपत्र वीरसेवामन्दिर सरसावा जि० सहारनपुरमें पं०जुगलकिशोर मुख्तारके सम्पादकत्वमें प्रकाशित होता है। इसमें नीति-विज्ञान-दर्शन-इतिहास-कला और समाज-शास्त्रके प्रौढ विचारोंसे परिपूर्ण तथा सर्वसाधारणके लिए उपयोगी और मनन करने योग्य महत्वके सुन्दर लेख रहते हैं।

पत्रकी नीति उदार है और यह सामाजिक झगड़े टंटोंसे सदा अलग रह कर लोक-सेवाका ठोस कार्य किया करता है। जिन्होंने अब तक यह पत्र न देखा हो उन्हें अवश्य ही इसे मँगा कर पढ़ना चाहिये। वार्षिक मूल्य ३) है।

व्यवस्थापक ‘अनेकान्त’